15

भाषा क्या है?

इस लेख में दो पहलुओं पर चर्चा है। ये दोनों ही पहलू छोटे संकेतों को जोड़कर अर्थपूर्ण संकेत बनाने से सम्बन्धित हैं। पहला पहलू यह है कि संकेतों को तोड़ने व अलग-अलग ढंग से जोड़ने की जो क्षमता इन्सानी भाषा में दिखती है वह अन्य जीवों की भाषा में बिलकुल नहीं दिखती। लेख ट्रैफिक लाइट के उदाहरणों की मदद से यह समझने में मदद करता है कि संकेत जितने ज़्यादा छोटे होंगे उतने ही ज़्यादा बड़े संकेत बनाने सम्भव हैं। यह दिखाता है कि इन्सानी भाषा, इन्सानी संज्ञान के साथ-साथ उसकी मंशा के साथ जुड़ी है। लेख दिखाता है कि इन्सानी भाषा में असीमित उत्पादकता व सृजनात्मकता है लेकिन यह नियमबद्ध भी है। इन्सान की भाषाई उत्पादकता पशु-पक्षियों व अन्य से कहीं अधिक है पर यह सटीक नियमों से संचालित है ताकि ये एक-दूसरे की बात समझ पाएँ। इस लेख में भाषा के ये नियम ध्वनि स्तर पर शब्द बनाने में व अर्थ स्तर पर वाक्य बनाने में साफ दिखते हैं।

भाषा क्या है? यह सवाल काफी उलझा हुआ है। यदि कोई सन्देश दूसरे व्यक्ति तक पहुँचे यही भाषा है, तो क्या हर गतिविधि जिसमें एक सार्थक सन्देश दिया जा रहा हो, उसे हम भाषा कह सकते हैं? ट्रैफिक की बत्तियाँ चौराहों या सड़कों के मिलन स्थान पर इस्तेमाल होती हैं, वाहन चलाने वालों तक सन्देश भेजने के लिए। ये बत्तियाँ एक-एक कर के एक निश्चित क्रम और निश्चित अन्तराल में जलती-बुझती हैं। एक समय में एक सड़क से ट्रैफिक बत्तियों तक आने वाले वाहनों को अपने आगे जाने की दिशा के अनुसार एक ही बत्ती जलती दिखती है। इनके जलने पर निम्न सन्देश मिलते हैं -

लाल: रुको

नारंगी: तैयार रहो

हरा: चलो

इसी तरीके को आगे बढ़ाते हुए हम दो बत्तियों को मिलाकर सन्देश दे सकते हैं जैसे-

लाल - नारंगी: आगे खतरा है।

नारंगी - हरा: आगे रास्ता साफ है।

हरा - लाल: आगे ढलान है।

तीनों बत्तियों को एक साथ जलाकर भी एक बात कही जा सकती है।

लाल हरा नारंगी: आगे रास्ता बन्द है।

इस प्रकार तीन मूल संकेतों को मिलाकर हम कुल सात संकेत ही दे सकते हैं, इससे अधिक नहीं।

क्या भाषा पर भी हम कोई ऐसी सीमा लगा सकते हैं? क्या हम कह सकते हैं कि हिन्दी में केवल 500 या 1000 बातें ही कही जा सकती हैं? यदि हम ऊपर वाले उदाहरण में बत्तियों की संख्या बढ़ा भी दें तो भी सन्देशों की संख्या सीमित रहेगी।

यदि बत्तियों की संख्या हम 10 कर दें, और सन्देश भी एक या दो बत्तियों से देना हो तो कुल सन्देशों की संख्या 55 रहेगी। किसी भी भाषा पर इस तरह की सीमा लगाना सम्भव नहीं है।

पशु-पक्षियों की बात ही लें। जिस किसी ने भी गाय, कुत्ते, बिल्ली, चिड़िया, चींटी, मधुमक्खी आदि को ध्यान से देखा है, वह जानता है कि इन सबका भी बातचीत करने का अपना ढंग होता है। इस भाषा का माध्यम कुछ भी हो सकता है - बोलना, गाना, देखना, सूँघना या छूना। कुछ पक्षी अपनी माँ की चोंच पर विशेष किस्म से प्रहार करके खाना माँगते हैं। इस प्रकार मधुमक्खियाँ विशेष प्रकार के नृत्य से यह बताती हैं कि शहद किस दिशा में उपलब्ध है। और पक्षी तो अपने गानों के सहारे बहुत कुछ कहते प्रतीत होते हैं।

लेकिन अभी तक के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि इन सभी में संकेत और सन्देश में एक सीधा और सरल सम्बन्ध होता है। पशु-पक्षी शायद सीमित मूल सन्देशों को मिला कर नित्य नए सन्देश नहीं बना सकते और इस प्रकार वे एक सीमित संख्या में ही सन्देश दे सकते हैं।

ट्रैफिक की बत्तियों और पशु-पक्षियों के उदाहरण में एक ही समानता है - वह है सन्देशों के सीमित होने की। इन दोनों में बहुत से अन्तर भी हैं। उदाहरण के लिए, ट्रैफिक की बत्तियों को मालूम नहीं वे क्या कह रही हैं, वे हर परिस्थिति में एक निश्चित अन्तराल के बाद वही सन्देश देंगी, आदि-आदि। यानी किसी ट्रैफिक लाइट के लिए यह बताया जा सकता है कि वह एक घण्टे पाँच मिनट 20 सेकंड के बाद क्या सन्देश दे रही होगी लेकिन पशु-पक्षियों के बारे में यह नहीं बताया जा सकता।

कुछ लोगों ने चिम्पान्ज़ी को अपने ही बच्चों की तरह पाला और उन्हें भाषा सिखाने की कोशिश की। भाषा-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य में वाशो और सारा नामक दो चिम्पान्ज़ी का अक्सर ज़िक्र आता है। इन्हें मानवीय भाषा सिखाने की काफी कोशिश के बाद इनको 50-60 सन्देश आ गए थे। लेकिन इनकी क्षमता नित्य नए सन्देश बनाने की नहीं हो पाई। इसके आधार पर अभी यह माना जाता है कि नई-नई परिस्थितियों के लिए नए-नए वाक्य, नए-नए भाव की रचना सिर्फ मानव ही कर सकता है। मानव यह काम कैसे करता है, आइए इसे समझने की कोशिश करें।

संकेतों के सन्दर्भ में हम आगे बढ़ें तो कह सकते हैं कि व्याकरण के गिने-चुने नियमों के अनुसार असंख्य वाक्यों का निर्माण करना मानवीय भाषा का एक पहलू है। हम अपनी ज़रूरत के अनुसार व्याकरण के नियमों में बँधे नित नए वाक्य बना सकते हैं। हमारी अपनी भाषा में सामान्यत: हमारा कोई वाक्य गलत नहीं होता और अगर होगा भी तो हम उसे ठीक करने की क्षमता रखते हैं।

इन्सानी भाषा में कौन-सी ऐसी बात है कि किसी भी सामान्य इन्सान का भाषाई भण्डार किसी भी परिस्थिति में मार नहीं खाता। हम नित-प्रतिदिन कैसे नई-नई बातें समझते और कहते हैं? इन्सानी भाषा में दो अलग-अलग स्तरों पर क्रमबद्धता है जो किसी भी और सम्प्रेषण के तरीके में नहीं पाई जाती। इन्सानी भाषा दो स्तरों पर संरचित है - ध्वनियों के स्तर पर और वाक्यों के स्तर पर। दोनों स्तरों पर एक अनूठी बात है। एक ओर तो हमें ध्वनियों को मिलाकर असंख्य वाक्य बनाने की पूर्ण आज़ादी है। दूसरी ओर, दोनों स्तरों पर स्पष्ट नियम हैं जिनका उल्लंघन करना अक्सर कठिन होता है। बातचीत का सफल माध्यम बनने के लिए, भाषा की संरचना में इन दोनों का होना आवश्यक भी है। यदि असीम सृजनात्मकता न हो तो हम अपनी हर बात न कर सकें और यदि नियमों का बन्धन न हो तो दूसरा हमारी बात समझ न सके। इसी बात को हम आगे के उदाहरणों से समझते हैं।

ध्वनि के स्तर को लीजिए। हिन्दी में 'ड' और 'ढ' शब्दों के मध्य में और अन्त में आने पर क्रमश: 'ड़' और 'ढ़' हो जाती है (जैसे डमरू, डिगना, में नहीं लेकिन लड़, लकड़ी, खिड़की में, इसी तरह ढक्कन, ढेला में नहीं पर पढ़ना, चढ़ में। यह अलग बात है कि सोडा तथा रेडियो जैसे विदेशी शब्दों ने इस नियम के कुछ अपवाद पैदा कर दिए हैं। अब शायद कुछ नए शब्दों में 'ड' भी शब्दों के मध्य में आने लगे। भाषा में परिवर्तन आने का यह भी एक साधन है।) अरबी भाषा में कुल मिलाकर 30 ध्वनियाँ हैं। इन्हीं को मिला-जुला कर अरबी भाषा के हज़ारों शब्द बनते हैं। लेकिन इन ध्वनियों को हम जैसे चाहे वैसे नहीं मिला सकते। उदाहरण के लिए, अरबी भाषा का नियम है कि शब्द अधिकतर व्यंजन से ही शुरू हों और शब्दों की संरचना व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर क्रम के अनुसार ही हो।

अँग्रेज़ी भाषा की सम्पूर्ण शब्द सम्पदा 24 व्यंजनों एवं 20 स्वरों को मिलाकर बनी है। 'ड़' को छोड़कर आप किसी भी व्यंजन से अँग्रेज़ी में शब्द शुरू कर सकते हैं। लेकिन जब दो या दो से अधिक व्यंजनों को मिलाने की बात आती है, तो अँग्रेज़ी में इतनी आज़ादी नहीं। कड़े नियम हैं और इन नियमों का उल्लंघन कर अँग्रेज़ी का कोई शब्द नहीं बन सकता। किसी

भी शब्द के आरम्भ में तीन से अधिक व्यंजन नहीं हो सकते। यहाँ तात्पर्य उच्चारण से है, वर्णमाला से नहीं। यानी बात अक्षर समूह की नहीं है, उसमें तो बहुत से हो सकते हैं जैसे Psycho में पाँच हैं, किन्तु बोलने में यह 'साईको' है। यानी ध्वनि की दृष्टि से देखें तो यहाँ एक ही व्यंजन – स – शुरू में है। यदि हमें पूर्ण स्वतंत्रता हो तो गणित की दृष्टि से हम 24 व्यंजन ध्वनियों से 12,144 तीन-तीन व्यंजनों के समूह बना सकते हैं। (यह तब जब किसी समूह में भी कोई भी व्यंजन दोहराया ना जाये)। लेकिन अँग्रेज़ी भाषा के शब्दों के शुरू में केवल निम्नलिखित आठ व्यंजन समूह ही पाए जा सकते हैं:

Street	स् + ट् + र्
Split	स् + प् + ल्
Spring	स् + प् + र्
Spew	स् + प् + य्
Screw	स् + क् + र्
Square	स् + क् + व्
Skew	स् + क् + य्
Sclerosis	स् + क् + ल्

बारह हज़ार से भी अधिक सम्भव समूहों में से अँग्रेज़ी में केवल आठ ही त्रि-व्यंजन समूह बनाए जा सकते हैं। यही नहीं, अँग्रेज़ी के किसी शब्द के आरम्भ में यदि तीन व्यंजन होंगे तो उनमें से पहला व्यंजन 'स्' के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता और दूसरा व्यंजन केवल 'प्', 'ट्' या 'क्' हो सकता है और तीसरा केवल 'य्', 'र्', 'ल्' या 'व्' हो सकता है। इस प्रकार sprig या splick तो अँग्रेज़ी के नए शब्द हो सकते हैं परन्तु plsick या rpsig कभी नहीं। ध्वनियों से शब्द बनाने के नियम हैं और इसी तरह शब्दों से वाक्य बनाने के भी नियम हैं। हिन्दी भाषा का नियम है कि क्रिया सामान्यत: वाक्य के अन्त में ही आएगी। अँग्रेज़ी में क्रिया वाक्य के मध्य में आती है। हम अपनी भाषा में असंख्य वाक्य समझ सकते हैं, बना सकते हैं, लेकिन नियमों की हद में रहकर ही। अँग्रेज़ी के निम्न शब्दों को देखिए।

1. book 2. a 3. reading 4. is 5. she 6. red

हम इन शब्दों को किस क्रम में मिलाकर अँग्रेज़ी के सही वाक्य बना सकते हैं:

(a) 543261: She is reading a red book.

(b) 453261: Is she reading a red book?

शायद यही दो सार्थक वाक्य बन सकते हैं। यदि हम अन्य क्रम बनाएंगे तो ऐसे वाक्य बनेंगे जो किसी को समझ में नहीं आ सकते।

जैसे:

(a) 364512: Reading red is she book a.

(b) 621435: red a book is reading she.

(c) 135246: Book reading she a is red.

आप और भी ऐसे वाक्य बना कर कोशिश कर सकते हैं। कुल मिला कर 6 x 5 x 4 x 3 x 2 = 720 सम्भावनाओं में से केवल दो।

हम एक और बात देख सकते हैं कि यदि वाक्य (a) को प्रश्न बनाना हो तो केवल एक ही तरीका है कि is को वाक्य के आरम्भ में कर दिया जाए और इसी तरह यदि (a) को निषेध वाचक वाक्य बनाना हो तो not का स्थान निश्चित है। वह वाक्य होगा Is she not reading a red book? एक वाक्य को दूसरे वाक्य में कैसे बदला जाए, यह पहले वाक्य की संरचना पर निर्भर करता है।

अब एक और भाषा लें, हम यहां हिन्दी ले रहे हैं आप अगर और भाषाएँ जानते हैं तो उनसे भी कोशिश कर सकते हैं। इसमें भी शब्दों के कुछ क्रम ही मान्य हैं। पर अंग्रेजी से कुछ ज़्यादा। मानो शब्द हैं;

1. रेवा 2. आज 3. खाना 4. ने 5. बनाया

क) 23145 आज खाना रेवा ने बनाया।

ख) 21435 आज रेवा ने खाना बनाया।

ग) 32145 खाना आज रेवा ने बनाया।

घ) 14235 रेवा ने आज खाना बनाया।

इसमें हम देख सकते हैं कि सार्थक सम्भावनाएँ कुछ ज़्यादा हैं। पर निम्न क्रम मान्य नहीं होंगे।

1) 42315 ने आज खाना रेवा बनाया

2) 54321 बनाया ने खाना आज रेवा

3) 24351 आज ने खाना बनाया रेवा

4) 32154 खाना आज रेवा बनाया ने

आप और भी ऐसे वाक्य बना कर कोशिश कर सकते हैं। यहां हम देख सकते हैं कि कुल मिला कर 5 x 4 x 3 x 2 = 120 सम्भावनाओं में से केवल थोड़े ही। यहाँ भी अगर प्रश्न बनाना है तो प्रश्न सूचक शब्द भी निश्चित जगहों पर भी आ सकता है। जैसे, 'आज रेवा ने क्या बनाया?' यानी 'क्या' 'खाने' की जगह आएगा। और यह पूछना है कि 'खाना किसने बनाया?' तो 'किसने' रेवा की जगह जाएगा, यानी आज खाना किसने बनाया?

यदि इन नियमों का पालन न किया जाए तो हम जो कह रहे हैं या लिख रहे हैं उसका अर्थ या तो कोई और समझ ही नहीं सकता और यदि समझेगा भी तो बहुत प्रयास के बाद। यदि भाषा में ऐसे कोई नियम नहीं हों तो उसकी सृजनात्मकता व विविधता तो शायद बढ़ेगी। लेकिन एक ही बात को कहने के बहुत से ढंग हो जाएँगे और एक ही वाक्य से बहुत से अर्थ निकाले जा सकेंगे। इसी लिए संरचना दो स्तरों पर भाषा की सम्भावना बढ़ाती है।

ध्वनि और वाक्य के स्तर पर संरचित भाषा अपने भावों और विचारों को प्रकट करने का एक सफल माध्यम है। साथ ही, भाषा के ऐतिहासिक, मानसिक एवं सामाजिक पहलू हैं जिन्हें भाषा की परिभाषा एवं संरचना से अलग नहीं किया जा सकता। सदियों से चली आ रही, निरन्तर बदलती, जन्म से ही अपने पूर्वजों से विरासत में मिली भाषा वह माध्यम है जिससे हर इन्सान अपनी और दूसरों की पहचान बनाता है और दूसरों की पहचान समझता है। भाषा का प्रयोग करना सीखना वास्तव में अपनी पहचान बनाए रखकर दूसरों की बात समझना ही है।

इस लेख में हमने सिर्फ शब्द तथा वाक्य संरचना की दृष्टि से यह समझने की कोशिश की है कि भाषा क्या है। लेकिन यह इस सवाल का सिर्फ एक पहलू है।

स्रोत

- रमाकान्त अग्निहोत्री व हृदय कान्त दीवान, होशंगाबाद विज्ञान बुलेटिन, सितम्बर 1987, अंक 24, पृ 36-40 (https://www.eklavya.in/pdfs/archives/vigyan_bulletin/Hoshangabad_Vigyan_Bulletin_issue_24.pdf) के आधार पर हृदय कान्त दीवान व रजनी द्विवेदी द्वारा सम्पादित।